

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, क्राइस्टोलॉजी, सत्र 5, पैट्रिस्टिक क्राइस्टोलॉजी, भाग 4, मोनोफ़िज़िटिज़्म और चाल्सेडन की परिषद

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्लेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन हैं जो क्राइस्टोलॉजी पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 5, पैट्रिस्टिक क्राइस्टोलॉजी, भाग 4, मोनोफ़िज़िटिज़्म और चाल्सीडॉन की परिषद है।

आइए हम सब मिलकर प्रार्थना करें, दयालु पिता, क्योंकि हम प्राचीन चर्च के क्राइस्टोलॉजी के अध्ययन से आधुनिक धर्मशास्त्र की ओर बढ़ रहे हैं।

हम प्रार्थना करते हैं कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपके पवित्र वचन से सभी बातों को परखने में हमारी सहायता करें, आमीन। हम पैट्रिस्टिक क्राइस्टोलॉजी का समापन कर रहे हैं, चाल्सीडॉन की महान परिषद और उसके निष्कर्षों की ओर बढ़ रहे हैं, लेकिन एक और विधर्म से निपटना है और वह है मोनोफ़िज़िटिज़्म या यूटीचियनिज़्म। मुझे नहीं लगता कि मैंने आपको पहले बताया था कि हम प्रोफेसर और सेवानिवृत्त प्रोफेसर इन बड़े शब्दों को क्यों पसंद करते हैं।

हम उन्हें पसंद करते हैं क्योंकि वे हमें काम पर रखते हैं क्योंकि आपको हमारी ज़रूरत है। मोनोफ़िज़िटिज़्म की पहचान यूटीकियस, 380-456 से की जाती है, जो कॉन्स्टेंटिनोपल में एक मठ का एक पादरी और नेता था, जिसे 451 में चाल्सेडन में दोषी ठहराया गया था। यूटीकियस ने सिखाया कि अवतार के परिणामस्वरूप, मसीह की मानवीय प्रकृति को ग्रहण किया गया, अवशोषित किया गया, और दिव्य प्रकृति में विलीन कर दिया गया ताकि दोनों प्रकृतियाँ एक नई प्रकृति में बदल जाएँ, एक ऐसी प्रकृति जो अब एक तरह की दिव्य-मानव मिश्रित थी।

इस दृष्टिकोण को मोनोफ़िज़िटिज़्म भी कहा जाता है, जिसके अनुसार देहधारी मसीह का स्वभाव एक था, मानोस, प्रकृति, फ़्यूसिस, दो नहीं। इसलिए यह उसे संकर बनाता है, न तो ईश्वर और न ही मनुष्य। यूटीकियस का दृष्टिकोण मूल रूप से शब्द मांस क्राइस्टोलॉजी का एक संस्करण है।

जैसा कि सैंडर्स बताते हैं, यूटीचियस के लिए, दो प्रकृतियों का अर्थ, उद्घरण, दिव्य और मानव के रूप में समान रूप से पहचाने जाने योग्य तीसरा पदार्थ उत्पन्न नहीं करता है। चूँकि दिव्यता मानवता से असीम रूप से बड़ी है, इसलिए प्रकृति के यूटीचियन मिश्रण का परिणाम एक समान यौगिक नहीं बल्कि अधिकतर दिव्य मसीह है। हालाँकि यह दृष्टिकोण अपोलिनेरियनवाद से अलग है, लेकिन परिणाम समान है कि इस नई प्रकृति में, हमारे पास एक प्रबल दिव्यता और एक डूबी हुई मानवता है।

संभवतः अधिक सुसंगत रूप से, बाद में मोनोफिसाइटों ने जोर देकर कहा कि दो प्रकृतियों के मिलन से एक टेरटियम क्विड, एक तीसरा कुछ और, शाब्दिक रूप से, एक तीसरा कुछ, जो न तो

दिव्य था और न ही मानवीय। लेकिन मोनोफिज़िटिज़्म के हर रूप का परिणाम यह है कि मसीह न तो वास्तव में ईश्वर है और न ही वास्तव में मनुष्य, यह दृष्टिकोण शास्त्र के विपरीत है और हमें एक ऐसे मसीह के साथ छोड़ देता है जो उद्धार नहीं कर सकता - चाल्सीडॉन की परिषद 451, क्रिस्टोलॉजिकल ऑर्थोडॉक्सी।

अक्टूबर 451 में, 520 बिशप चर्च के भीतर चल रहे ईसाई विवादों से निपटने के लिए चाल्सेडन में एकत्र हुए। चर्च के अधिकांश बिशप पूर्व से थे, केवल चार पश्चिम से, दो उत्तरी अफ्रीका से और दो जो रोम के पोप लियो के प्रतिनिधि थे। हाँ, लियो के टोम के कारण पश्चिमी प्रभाव बहुत अधिक था, एक पत्र जो परिषद से पहले लिखा गया था और जिसे चाल्सेडोनियन पंथ में शामिल किया जाएगा।

पहले के नाइसिन पंथ की तरह, चाल्सेडोनियन परिभाषा, जिसे पंथ कहा जाता है, कई दशकों तक विवाद का केंद्र बनी रही। लेकिन इसे कभी अलग नहीं रखा गया, और जैसा कि ब्राउन ने नोट किया, यह प्रारंभिक ईसाई धर्मशास्त्र का दूसरा महान उच्च-जल चिह्न बन गया। इसने रूढ़िवादी के लिए एक अमर मानक स्थापित किया, उद्धारण बंद करें, क्योंकि इसने दो प्रकृति, एक व्यक्ति के क्लासिक सूत्रीकरण में मसीह के देवता और मानवता को स्वीकार किया।

इस प्रकार, इसने सभी पिछले झूठे मसीह संबंधी विचारों को खारिज कर दिया और बयानों की एक श्रृंखला में मसीह की पहचान की सकारात्मक समझ प्रस्तुत की। इसने स्पष्ट रूप से प्रकृति को व्यक्ति से अलग किया। ब्राउन व्यक्ति के संबंध में, इसने जोर देकर कहा कि अवतार का सक्रिय विषय, "एक और वही मसीह," कोई और नहीं बल्कि शाश्वत पुत्र है, जो पिता और आत्मा के साथ एकरूप है, लेकिन जिसने अब एक पूर्ण मानव प्रकृति ग्रहण कर ली है ताकि वह अब दो प्रकृतियों में रह सके, ऐसी प्रकृतियाँ जो भ्रमित या परिवर्तित नहीं हैं, लेकिन अपनी सभी विशेषताओं को बरकरार रखती हैं।

चाल्सेडोनियन परिभाषा के अनुसार, चाल्सेडोनियन धर्म-पंथ में कहा गया है, और मैं पवित्र पिताओं के साथ सहमति में उद्धृत करता हूँ, हम सभी सर्वसम्मति से सिखाते हैं कि हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि हमारे प्रभु यीशु मसीह एक और एक ही पुत्र हैं, ईश्वरत्व में भी वही परिपूर्ण हैं और मनुष्यत्व में भी वही परिपूर्ण हैं, वास्तव में ईश्वर और वास्तव में मनुष्य हैं, एक ही तर्कसंगत आत्मा और शरीर, ईश्वरत्व में पिता के साथ एकरूप और मनुष्यत्व में हमारे साथ एकरूप। पाप को छोड़कर सभी बातों में हमारे जैसा, अपने ईश्वरत्व के संबंध में पिता से युगों पहले उत्पन्न हुआ, और अंतिम दिनों में हमारे कारण और हमारे उद्धार के कारण वही, वर्जिन मैरी, थियोटोकोस, ईश्वर-वाहक से उत्पन्न, अपने मनुष्यत्व के संबंध में, एक और एक ही मसीह, पुत्र, प्रभु, एकमात्र जन्मा, दो स्वभावों में जाना गया, बिना किसी भ्रम के, बिना किसी परिवर्तन के, बिना किसी विभाजन के, बिना किसी अलगाव के। पहले दो बिना यूटीचियनवाद या मोनोफिज़िटिज़्म के विरुद्ध हैं, बिना किसी भ्रम के, बिना किसी परिवर्तन के।

दूसरे दो नेस्टोरियनवाद के विरुद्ध हैं, बिना विभाजन के, बिना अलगाव के। प्रकृति के अंतर को किसी भी तरह से संघ के कारण दूर नहीं किया जा रहा है, लेकिन प्रत्येक प्रकृति की संपत्ति को एक प्रोसोपोन और एक हाइपोस्टैसिस, एक व्यक्ति में संरक्षित और एकीकृत किया जा रहा है, जो

दो प्रोसोपोपर्सन में विभाजित या विभाजित नहीं है, बल्कि एक और एक ही पुत्र, एकमात्र भिखारी, दिव्य शब्द, प्रभु यीशु मसीह है। जैसा कि पुराने भविष्यवक्ताओं और स्वयं यीशु मसीह ने हमें उसके बारे में सिखाया है, और हमारे पूर्वजों के पंथ ने हमें सौंप दिया है।" उद्धरण बंद करें।

चाल्सीडॉन का महत्व और इसके मुख्य क्राइस्टोलॉजिकल बिंदु। चाल्सीडॉन क्यों महत्वपूर्ण है? इस कारण से, इसने मसीह की पहचान के संबंध में चर्च को परेशान करने वाली हर समस्या को संक्षेप में प्रस्तुत करने और संबोधित करने का प्रयास किया। इसने अटकलों को रोकने, पूर्व और पश्चिम के बीच भाषा के उपयोग को स्पष्ट करने का प्रयास किया, और इस तरह, यह एक रक्षात्मक निश्चित कथन के रूप में कार्य करता है, मुझे क्षमा करें, और बाद के सभी क्राइस्टोलॉजिकल चिंतन के लिए रोडमैप।

मैं चाहता हूँ कि ऐसा ही होता। हम आधुनिक काल में देखेंगे, इसे आम तौर पर अस्वीकार कर दिया जाता है, और इसके स्थान पर जो रखा जाता है वह अच्छा नहीं है। नीचे से क्राइस्टोलॉजी हैं, और यीशु एक साधारण मनुष्य हैं, चाहे वह कितना भी महान क्यों न हो।

चाल्सेडन ने एक समय में डोसेटिज्म, एडाप्शनिज्म, मोडलिज्म, एरियनिज्म, अपोलिनेरियनिज्म, नेस्टोरियनिज्म, मोनोफिज़िटिज्म के खिलाफ तर्क दिया। इसने डोसेटिज्म के खिलाफ तर्क दिया। प्रभु यीशु मनुष्यत्व, मनुष्यत्व, मनुष्यत्व, वास्तव में मनुष्य, समरूप, होमोउसियन में परिपूर्ण थे, उनके मनुष्यत्व या मानवता के अनुसार हमारे साथ थे, और मैरी से पैदा हुए थे।

चाल्सेडन ने दत्तक ग्रहणवाद के खिलाफ तर्क दिया। इसने लोगोस के व्यक्तिगत अस्तित्व के लिए तर्क दिया, उद्धरण, युगों से पहले पिता से उत्पन्न, न कि एक मानव प्राणी जिसे भगवान ने आकर सुपर वास किया और सशक्त बनाया, नहीं, कि भगवान ने गोद लिया, नहीं। बेटा हमेशा पिता का बेटा था, पिता हमेशा बेटे का पिता था।

मोडलिज्म ने पिता और पुत्र दोनों की उपाधियों के द्वारा पुत्र को पिता से अलग किया, तथा पिता द्वारा युगों से पहले पुत्र को जन्म देने के संदर्भ में। एरियनिज्म ने पुष्टि की कि प्रभु यीशु ईश्वरत्व में परिपूर्ण थे, वास्तव में ईश्वर थे। अपोलिनेरियनिज्म ने स्वीकार किया कि प्रभु यीशु वास्तव में एक विवेकशील आत्मा और शरीर वाले मनुष्य थे, जो हमारे जैसे सभी चीजों में अपनी मनुष्यता के अनुसार हमारे साथ एकरूप थे।

याद रखें, अपोलिनरियस ने कहा कि यीशु ने मानव शरीर लिया, लेकिन मानव आत्मा नहीं। यीशु में लोगोस ने वह स्थान ले लिया। इस प्रकार, अपोलिनेरियनवाद मसीह की पूर्ण मानवता को नकारता है और इस प्रकार हमारे उद्धार को खतरे में डालता है क्योंकि उद्धारक को हमें बचाने में सक्षम होने के लिए ईश्वर होना पड़ा और उसे हमें, अपने साथी मनुष्यों को बचाने में सक्षम होने के लिए एक मानव बनना पड़ा, यदि आप थे, यदि आप चाहें।

वह कभी भी केवल एक इंसान नहीं था, बल्कि वह एक सच्चा इंसान बन गया, उसने खुद को एक सच्चा इंसान बना लिया। नेस्टोरियनवाद ने मरियम को थियोटोकोस, ईश्वर-वाहक के रूप में मान्यता दी, मरियम को महिमामंडित करने के लिए नहीं बल्कि यीशु के सच्चे ईश्वरत्व और एक

वास्तविक अवतार के तथ्य की पुष्टि करने के लिए। उसने अपने गर्भ में जो बच्चा रखा था वह ईश्वर था।

वह ईश्वर का भ्रूण था, ईश्वर का भ्रूण था, ईश्वर का शिशु था। अविश्वसनीय। इस तरह से, वह ईश्वर की कृपा से थियोटोकोस है।

वह वाहन थी, हमारे प्रभु की माँ, जब मरियम अपने चचेरे भाई से मिलने गई थी। यहाँ मेरी मदद करें। जैसे जब मरियम एलिज़ाबेथ से मिलने गई, तो यह सही है, एलिज़ाबेथ ने कहा, मेरे प्रभु की माँ, भले ही वह इसे समझ न पाई हो, यह स्वीकार करते हुए कि मरियम, ईश्वर की कृपा से, ईश्वर-वाहक थी।

यह मरियम को महिमामंडित नहीं करता या उसे प्रार्थना या मध्यस्थता या पूजा या श्रद्धा या ऐसी किसी भी चीज़ का पात्र नहीं बनाता, बल्कि यह इस बात पर ज़ोर देता है कि उसके गर्भ में पल रहा बच्चा दिव्य था। चाल्सेडोनियन परिभाषा में भी एक ही पुत्र और एक व्यक्ति और एक अस्तित्व की बात की गई है, जो दो व्यक्तियों में विभाजित या विभाजित नहीं है और जिनके स्वभाव बिना विभाजन के, बिना अलगाव के एकता में हैं। समानता पर ज़ोर वास्तव में थका देने वाला है, जो नेस्टोरियस का विरोध करता है।

मोनोफ़िज़िटिज़्म ने स्वीकार किया कि मसीह में, बिना किसी भ्रम और बिना किसी बदलाव के दो स्वभाव थे। प्रत्येक स्वभाव की संपत्ति एक व्यक्ति में संरक्षित और सहवर्ती है। चाल्सीडॉन एक शानदार उपलब्धि थी।

पाँच बिन्दुओं ने परिभाषा के मर्म को पकड़ लिया। सबसे पहले, यह एक संदेश है, पाँच बिन्दुओं पर एक व्याख्यान, कैल्विनवाद का नहीं, बल्कि चाल्सेडोनियन रूढ़िवाद का। मेरे सुधारवादी मित्रों के लिए यहाँ एक छोटा सा व्यंग्य है।

सबसे पहले, मसीह वास्तव में और पूर्ण रूप से ईश्वर और मनुष्य थे। मसीह के ईश्वरत्व और उनकी मानवता दोनों को समान रूप से संरक्षित किया गया है और इस पर जोर दिया गया है ताकि वह हमारे महान महायाजक और मध्यस्थ के रूप में सेवा कर सकें और हमारे लिए उद्धार जीत सकें। दूसरा, व्यक्ति और हाइपोस्टैसिस को एक ही चीज़ के रूप में देखा जाता है।

ऐसा करने में, चाल्सेडन व्यक्ति और प्रकृति के बीच एक स्पष्ट अंतर प्रदान करता है। एक व्यक्ति को अपने आप में एक सिद्धांत के रूप में देखा जाता है, न कि प्रकृति से या दो प्रकृतियों के मिलन से तीसरे तत्व के रूप में। जब मानव प्रकृति को ग्रहण किया जाता है तो एक नया व्यक्ति अस्तित्व में नहीं आता है, न ही इसका परिणाम दो व्यक्तियों में होता है।

इसके बजाय, चाल्सेडन पुष्टि करता है कि अवतार का व्यक्ति शाश्वत पुत्र है, ईश्वरत्व का दूसरा व्यक्ति। इस प्रकार, मैं बाद में व्यवस्थित विज्ञान के तहत सिखाऊंगा कि मसीह में व्यक्तित्व की निरंतरता उसकी मानवता द्वारा नहीं बल्कि इस तथ्य से प्रदान की जाती है कि वह शाश्वत पुत्र है। वह पूर्व-अवतार पुत्र है और फिर वह अवतार पुत्र बन जाता है।

मानवता निरंतर नहीं है। अवतार से पहले इसका अस्तित्व नहीं था। न केवल देवता निरंतर है, बल्कि दिव्य पुत्र भी निरंतर है।

उसके अलावा उसका कोई देवता नहीं है। इसलिए, यह पुत्र का व्यक्तित्व है जो अपने आप में एक वास्तविक मानवीय स्वभाव ग्रहण करता है। इसके अलावा, यह एक व्यक्ति है, न कि एक स्वभाव, जो देहधारी हुआ।

इसीलिए अवतार पुत्र का एक व्यक्तिगत कार्य है जिसने एक सेवक का रूप धारण किया, इब्रानियों 2:7, एक जानबूझकर, स्वैच्छिक और बलिदानपूर्ण तरीके से। यह पुत्र का व्यक्तित्व है जो एक अभिनय करने वाला एजेंट और पीड़ित विषय है। क्या इसका अर्थ पुत्र में कोई परिवर्तन है? इस अर्थ में नहीं कि पुत्र के व्यक्तित्व ने अपनी पहचान बदल दी या वह वह नहीं रहा जो वह हमेशा से था।

यहां तक कि देहधारी पुत्र के रूप में भी, वह सभी दिव्य गुणों से युक्त था और अपने सभी दिव्य कार्यों और विशेषाधिकारों को पूरा करता रहा। फिर भी, जैसा कि मैकलियोड ने सही कहा है, और मैं उद्धृत करता हूं, वास्तविक परिवर्तन है। परिवर्तन इस अर्थ में है कि मसीह में, परमेश्वर अनुभवों और रिश्तों की एक पूरी नई श्रृंखला में प्रवेश करता है।

वह मानव शरीर और मानव आत्मा में जीवन का अनुभव करता है। वह मानवीय पीड़ा और मानवीय प्रलोभनों का अनुभव करता है। वह गरीबी, अकेलेपन और अपमान को झेलता है।

वह मृत्यु का स्वाद चखता है। अवतार से पहले और उसके अलावा, भगवान ऐसी चीजों को अवलोकन द्वारा जानते थे। लेकिन अवलोकन, भले ही वह सर्वज्ञता का हो, व्यक्तिगत अनुभव से कमतर होता है।

यही वह है जो ईश्वर के लिए अवतार द्वारा संभव हुआ, मानव होने का एक वास्तविक व्यक्तिगत अनुभव। डोनाल्ड मैकलियोड एक धर्मनिष्ठ ईसाई व्यक्ति हैं। वे इन शब्दों के साथ श्रद्धापूर्वक बोल रहे हैं।

तीसरा, मसीह के मानव स्वभाव में कोई व्यक्तित्व नहीं था। यह इस अर्थ में अवैयक्तिक था कि ऐसा कोई व्यक्ति नहीं था जिसके अंदर परमेश्वर आकर वास करता। मसीह के मानव स्वभाव में कोई व्यक्तित्व या व्यक्तित्व नहीं था, जिसका अर्थ है कि यदि पुत्र मरियम के गर्भ में प्रवेश नहीं करता तो यीशु का अस्तित्व नहीं होता।

यदि पुत्र ने मरियम के गर्भ में प्रवेश न किया होता तो यीशु का अस्तित्व नहीं होता। इस दिव्य क्रिया के अलावा कोई मनुष्य नहीं था। लेकिन इस क्रिया के परिणामस्वरूप, पुत्र, जिसके पास अनंत काल से दिव्य प्रकृति थी, अब अपने आप में मानवीय गुणों के पूर्ण सेट के साथ एक मानवीय प्रकृति जोड़ता है, जो उसे पूरी तरह से मानवीय जीवन जीने की अनुमति देता है।

फिर भी, वह अपने मानवीय स्वभाव से पूरी तरह से सीमित या सीमित नहीं है। यही कारण है कि, जैसा कि फेयरबर्न हमें याद दिलाते हैं, चर्च के पिताओं ने परमेश्वर पुत्र के बारे में कहा कि वह

कुछ काम परमेश्वर के रूप में करता है और कुछ काम मनुष्य के रूप में करता है। उसी व्यक्ति ने ऐसी चीजें कीं जो मानवता के लिए उचित थीं और अन्य चीजें जो केवल परमेश्वर के लिए उपयुक्त या संभव थीं।

लेकिन जिस व्यक्ति ने ये सब किया वह वही परमेश्वर पुत्र था। इस प्रकार, यीशु एक ऐसे मनुष्य से कहीं बढ़कर है जो केवल परमेश्वर पुत्र द्वारा बसा हुआ है। वह परमेश्वर पुत्र है, जो मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर रहता है, प्रभु के रूप में हमारे उद्धार को पूरा करता है।

चाल्सीडॉन का एक निहितार्थ, जो निश्चित रूप से शास्त्र के लिए सत्य है, यह है कि जब भी हम मसीह के जीवन को देखते हैं और पूछते हैं, यह किसने किया? यह किसने कहा? हमारे लिए किसने मृत्यु सहन की? उत्तर हमेशा एक ही होता है। परमेश्वर पुत्र। क्यों? क्योंकि यह ईश्वरीय या मानवीय प्रकृति नहीं है जो कार्य करती है और इस प्रकार चीजें करती है।

बल्कि, यह पुत्र का व्यक्तित्व है जो अपने दिव्य और मानवीय स्वभाव के माध्यम से कार्य करता है। यह वह पुत्र है जो जन्मा, बपतिस्मा लिया, परीक्षा में पड़ा, रूपान्तरित हुआ, धोखा दिया गया, गिरफ्तार किया गया, दोषी ठहराया गया और मर गया। यह वह पुत्र था जिसने हमारे उद्धार को सुरक्षित करने के लिए अपना खून बहाया।

यह पुत्र ही है जिसमें परमेश्वर की सभी धार्मिक माँगें पूरी होती हैं ताकि हमारा उद्धार अंततः परमेश्वर से हो। यह पुत्र ही है जो मृतकों में से जी उठा और जो अब राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु बनकर राज करता है। एक बार फिर, मैकलियोड, मैंने आपको बताया कि डोनाल्ड मैकलियोड की पुस्तक, *द पर्सन ऑफ़ क्राइस्ट*, प्रकाशित होने के बाद से ही मेरी मानक आवश्यक पाठ्यपुस्तक थी।

उसे फिर से उद्धृत करते हुए, "उसमें, पुत्र में, परमेश्वर प्रदान करता है और यहाँ तक कि वह प्रायश्चित भी बन जाता है जिसकी वह माँग करता है। उसमें, उसके शरीर में, उसके जीवनकाल की सीमाओं के भीतर, उसके शरीर की सीमाओं के भीतर, और उसके मानवीय अस्तित्व की सीमाओं के भीतर, परमेश्वर ने हमारे पापों से निपटा। वह एक मनुष्य है, फिर भी सार्वभौमिक महत्व का मनुष्य है, इसलिए नहीं कि उसकी मानवता किसी भी अर्थ में अनंत है, बल्कि इसलिए कि यह परमेश्वर की मानवता है। उसमें, परमेश्वर वास्तव में मानवीय अस्तित्व में रहता है।" मैकलियोड, *पर्सन ऑफ़ क्राइस्ट*, पृष्ठ 190।

चौथा, प्रकृतियों का ऐसा कोई मिलन नहीं है जो किसी भी प्रकृति की अखंडता को अस्पष्ट करता हो। देहधारी पुत्र परमेश्वर के भीतर, सृष्टिकर्ता-सृजन का भेद सुरक्षित है। प्रकृतियों का कोई मिश्रण या विशेषताओं का हस्तांतरण, संचार नहीं है इडियोमेटम, किसी तरह का टेरशियम क्रिड, किसी तरह का तीसरा कुछ और पैदा करता है। फिर भी, इसका मतलब यह नहीं है कि दो प्रकृतियाँ केवल एक दूसरे के साथ जुड़ी हुई हैं, बिना किसी संपर्क या बातचीत के एक दूसरे के बगल में पड़ी हैं।

इसके बजाय, इसमें गुणों का हस्तांतरण होता है जिसमें दोनों प्रकृतियों के गुण एक व्यक्ति में सह-अस्तित्व में होते हैं। यही कारण है कि शास्त्र कह सकता है कि ईश्वर का पुत्र अवतार एक साथ ब्रह्मांड को बनाए रख सकता है, कुलुस्सियों 1:17, पाप को क्षमा कर सकता है, मरकुस 2:10, भूखा और प्यासा हो सकता है, बुद्धि और ज्ञान में बढ़ सकता है, लूका 2:52, और यहाँ तक कि मर भी सकता है। एक बार फिर, यही कारण है कि शास्त्र कह सकता है कि ईश्वर का पुत्र अवतार एक ही समय में ब्रह्मांड को बनाए रख सकता है, कुलुस्सियों 1:17, पाप को क्षमा कर सकता है, मरकुस 2:10, पाप को उस तरह से क्षमा कर सकता है जिस तरह से हम पाप को क्षमा नहीं कर सकते।

ऐसा नहीं है कि जैक, मुझे माफ़ कर दो भाई, क्या तुम मुझे माफ़ करोगे? नहीं, ऐसा है कि यार, तुम्हारे पाप माफ़ कर दिए गए हैं। और ताकि दुनिया को पता चले कि मनुष्य के बेटे के पास धरती पर पाप माफ़ करने का अधिकार है, एक अदृश्य चमत्कार। मैं एक दृश्यमान चमत्कार करूँगा, यीशु कहते हैं।

अपना बिस्तर उठाओ और चलो। इसी तरह वह पापों को क्षमा करता है। वह पापों को वैसे ही क्षमा करता है जैसे परमेश्वर पापियों को क्षमा करता है।

उसी समय, यह दिव्य-मानव व्यक्ति जो ब्रह्मांड को बनाए रखता है और पाप को क्षमा करता है, भूखा और प्यासा हो जाता है। वह यूहन्ना 4 में कुएँ पर बैठा है क्योंकि वह अपनी यात्रा से थक गया है। वह बुद्धि और कद में बढ़ता है और परमेश्वर और मनुष्य के अनुग्रह में बढ़ता है, लूका 2:52, और यहाँ तक कि वह मर भी सकता था, और उसने ऐसा किया।

यही कारण है कि पुत्र अपने सभी कार्यों और अनुभवों में अवतार का विषय है, जिसमें दोनों प्रकृतियाँ शामिल हैं, प्रत्येक अपने विशिष्ट तरीके से। जैसा कि कार्ल बार्थ ने बाद में अवतार पुत्र में इस बिंदु को व्यक्त किया "जब यह व्यक्ति मानवीय भाषा में बोलता है तो ईश्वर स्वयं बोलता है। जब यह व्यक्ति मनुष्य के रूप में कार्य करता है और पीड़ित होता है तो ईश्वर स्वयं कार्य करता है और पीड़ित होता है। जब यह व्यक्ति मनुष्य के रूप में विजय प्राप्त करता है तो ईश्वर स्वयं विजय प्राप्त करता है।" *चर्च डोगमेटिक्स* 4.2।

पाँचवाँ, पुत्र ने अपने लिए एक पूर्ण मानव प्रकृति ग्रहण की, जिसमें एक तर्कसंगत आत्मा और शरीर शामिल था। चाल्सेडन जोर देकर कहते हैं कि यीशु की मानवता, पूर्ण मानवता होने के लिए, एक शरीर से अधिक होनी चाहिए।

इसमें हमारे जैसे ही एक पूर्ण मानव मनोविज्ञान शामिल होना चाहिए था। चाल्सेडन तब स्पष्ट रूप से एक व्यक्ति को आत्मा से अलग करता है, और यह आत्मा को मानव प्रकृति के हिस्से के रूप में स्थापित करता है। ऐसा करने में, यह केवल मांस क्राइस्टोलॉजी शब्द पर नहीं, बल्कि मनुष्य क्राइस्टोलॉजी शब्द पर जोर देता है।

शब्द ने अपने आप को केवल मानव शरीर नहीं, बल्कि शरीर और आत्मा से मिलकर बनी एक संपूर्ण मानव प्रकृति ग्रहण की। यह इस विचार को खारिज करता है कि पुत्र मानव आत्मा की

जगह लेता है। पुत्र या लोगो इसे प्रतिस्थापित करता है और निहित रूप से दावा करता है कि मसीह के पास एक मानवीय इच्छा और मन था, उसने स्पष्ट रूप से यह नहीं कहा, जो बाद में पैट्रिस्टिक क्राइस्टोलॉजी में सामने आता है।

जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, जब कोई ऐसा नहीं करता था, जब लोग इसे अस्वीकार करते थे, तो हर जगह धर्मशास्त्र में विवाद होता था। यह स्पष्ट रूप से दावा करता है कि मसीह के पास एक मानवीय इच्छा और मन था, भले ही यह बाद की पुष्टि 681 में छठी विश्वव्यापी परिषद तक तैयार या औपचारिक रूप से नहीं की गई थी। संक्षेप में, ये पाँच बिंदु चाल्सेडोनियन परिभाषा के दिल को पकड़ते हैं।

हालाँकि यह पंथ अधिकार में धर्मग्रंथ के समान नहीं है, फिर भी, यह एक ऐसा कथन है जो उन बुनियादी बिंदुओं को सामने रखता है जिन्हें हमें मसीह की पहचान के संबंध में स्वीकार करना, स्पष्ट करना और बचाव करना चाहिए। एक स्वीकारोक्ति कथन के रूप में, यह उन मापदंडों को स्थापित करता है जिनके भीतर चर्च को बाइबल के यीशु को सटीक रूप से पकड़ने के लिए धर्मशास्त्र का अध्ययन करना चाहिए। जैसा कि चाल्सीडॉन की प्रस्तावना में दावा किया गया है, इसे धर्मग्रंथ और संपूर्ण पितृसत्तात्मक परंपरा की पृष्ठभूमि के खिलाफ लिखा गया था।

और जैसा कि ग्रिलमेयर ने लिखा है, "कुछ परिषदें परंपरा में इतनी निहित हैं जितनी कि चाल्सेडन की परिषद, उद्धरण बंद करें। इस तरह, जैसा कि ब्राउन स्वीकार करते हैं, हेरोल्ड ओ.जे. ब्राउन, चाल्सेडोनियन परिभाषा उद्धरण, रूढ़िवाद को मापने के लिए हमारा मानक बन गया, जहाँ या तो मसीह के देवता या उनकी मानवता की पुष्टि को अस्वीकार कर दिया जाता है। इसका मतलब है कि ऐतिहासिक रूढ़िवाद को त्याग दिया गया है। चाल्सेडन का पंथ एक धार्मिक कार्यक्रम नहीं है, बल्कि इसकी सीमाओं से परे सीमाओं का एक समूह है। धर्मशास्त्र लगभग हमेशा संदेह, अविश्वास या विधर्म में पतित हो जाएगा। " *पंथ, परिषद और मसीह* ब्राउन की पुस्तक का नाम है।

हालाँकि, ऐसा कहने के बाद भी, इस परिभाषा पर लगातार हमले होते रहे हैं, खास तौर पर ज्ञानोदय युग के बाद से। इनमें से ज्यादातर हमले ऐतिहासिक ईसाई धर्म को अस्वीकार करने और उसके स्थान पर दूसरे विश्वदृष्टिकोण अपनाने के कारण हुए हैं। फिर भी चर्च के भीतर से भी कुछ लोगों ने इसकी आलोचना की है, कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट दोनों ने।

आइए हम संक्षेप में उन आलोचनाओं में से कुछ पर नज़र डालें क्योंकि हम पैट्रिस्टिक क्राइस्टोलॉजी का निष्कर्ष निकालते हैं। सबसे पहले, कुछ लोगों ने चाल्सेडन की आलोचना की है कि वह ओसिया, धर्मत्याग, वगैरह, सार, अस्तित्व, प्रकृति, और इसी तरह, व्यक्ति जैसी शब्दावली के इस्तेमाल में ग्रीक दार्शनिक सोच पर निर्भर है। जैसा कि आलोचना की जाती है, इस प्रभाव के कारण, बाइबिल की शिक्षा अनजाने में विकृत हो गई है, और क्राइस्टोलॉजी को आध्यात्मिक अटकलों तक सीमित कर दिया गया है।

कई कारणों से, यह आलोचना गलत है। एक ओर, मुद्दा बाइबिल से बाहर की दार्शनिक भाषा का उपयोग नहीं है क्योंकि सभी धर्मशास्त्र अनिवार्य रूप से ऐसा करते हैं। इसके बजाय, मुद्दा यह है

कि क्या वह भाषा, चाहे वह किसी भी सदी से ली गई हो, बाइबिल की भाषा और शिक्षा को विकृत करती है।

दूसरी ओर, भले ही पाँचवीं सदी के शब्दों का इस्तेमाल किया गया था, चाल्सेडन ने उन्हें बहुत ही गैर-यूनानी तरीकों से इस्तेमाल किया। उदाहरण के लिए, जैसा कि प्रस्तुत किया गया है, ग्रीक विचार में कहीं भी प्रकृति-व्यक्ति का भेद नहीं किया गया है। लेकिन चर्च ने ओसिया , प्रकृति और धर्मत्याग , व्यक्ति के बीच अंतर किया क्योंकि शास्त्र ने इसकी मांग की थी।

इसके अलावा, जैसा कि मैकलियोड ने समझदारी से नोट किया है, चाल्सीडॉन का धर्मशास्त्र पूरी तरह से गैर-यूनानी है। डोनाल्ड मैकलियोड के पर्सन ऑफ़ क्राइस्ट को उद्धृत करते हुए, उद्धरण, ग्रीक धर्मशास्त्र थियोफेनीज़, मानव रूप में देवताओं और दिव्य दत्तक ग्रहण के विचार के प्रति सहानुभूति रखता था, जिसमें एक देवता मानव व्यक्तित्व को नियंत्रित कर सकता है। लेकिन चाल्सीडॉन अवतार की भाषा है।

यह एक दिव्य व्यक्ति के देहधारण की बात करता है। यहाँ, परमेश्वर स्वयं एक सांसारिक, ऐतिहासिक अस्तित्व में प्रवेश करता है ताकि हम कह सकें कि यह व्यक्ति परमेश्वर का पुत्र है और इस विशेष व्यक्ति में, परमेश्वर वास्तव में एक मानवीय जीवन जीता है। यह ईश्वरीय दर्शन और दत्तक ग्रहण दोनों से कहीं आगे जाता है।

मैकलियोड ने कहा कि, जहाँ तक मैं देख सकता हूँ, यह एक बहुत ही गैर-यूनानी अवधारणा है, उद्धरण समाप्त। लेकिन यह आलोचना आगे बढ़ती है, वेलम तर्क देते हैं, यह इस प्रश्न पर उपरोक्त आपत्ति से संबंधित है कि क्या चाल्सेडन द्वारा इस्तेमाल किए गए उन्हीं शब्दों का उपयोग जारी रखना आवश्यक है या क्या हम 5वीं शताब्दी की शब्दावली का समकालीन भाषा में अनुवाद कर सकते हैं। यही मुद्दा है।

धर्मत्याग और ओसिया और उनके आधार पर तत्वमीमांसा को अधिक वर्तमान शब्दावली में अनुवाद करना ? सिद्धांत रूप में, अधिकांश लोग मैकलियोड से सहमत होंगे कि यह संभव है, जैसा कि वह हमें याद दिलाता है, हमारे समय में ओसिया , फ्यूसिस और धर्मत्याग की भाषा को उठाना उतना ही मुश्किल है जितना कि सेंट पॉल, मॉर्फे , होमियोमा और एकोन की भाषा को उठाना था , उदाहरण के लिए। फिर भी, अनुवाद का मुद्दा आसान नहीं है, खासकर जब लोग केवल पुरानी शब्दावली का नए में अनुवाद नहीं कर रहे हैं बल्कि वास्तव में शब्दों के अर्थ बदल रहे हैं। दूसरा, चाल्सेडन पर द्वैतवादी होने का भी आरोप लगाया गया है।

ऐसा प्रतीत होता है कि यह एक व्यक्ति के भीतर दो स्वभावों को एक साथ रखता है, जिसमें प्रत्येक स्वभाव अपने स्वयं के गुणों को लौटाता है, अपने स्वयं के गुणों को बनाए रखता है, इस प्रकार यीशु के अस्तित्व के कुछ पहलुओं को उनके मानवीय स्वभाव और अन्य को उनके दिव्य स्वभाव के लिए जिम्मेदार ठहराने की प्रथा की ओर ले जाता है, उनके बीच कोई विशिष्ट संबंध नहीं है। इसलिए, उदाहरण के लिए, अपरिवर्तनीयता और अपरिवर्तनीयता के मामले में, लियो पुष्टि करता है, और उसके बाद कई अन्य लोग, कि यीशु, उद्धरण, एक स्वभाव में मृत्यु के लिए

सक्षम था और दूसरे में इसके लिए असमर्थ था, उद्धरण बंद करें। चाल्सेडन सिखाता है कि ऐतिहासिक यीशु का ईश्वर और मनुष्य के रूप में एक तरह का दोहरा अस्तित्व है।

हम इसका सुसंगत अर्थ कैसे निकाल सकते हैं? सच में, इस आपत्ति का उत्तर देना हमें अवतार के बारे में धर्मशास्त्र के केंद्र में ले जाता है। इस आलोचना का उत्तर कैसे दिया जाता है, यह विभिन्न क्राइस्टोलॉजिकल सूत्रों को अलग करता है। इस बिंदु पर यह कहना पर्याप्त है कि चाल्सीडॉन की आवश्यकता क्यों थी, इसका कारण इस प्रश्न का उत्तर बाइबल के अनुसार न देने के विभिन्न विधर्मों प्रयासों से बचना था।

वास्तव में, चाल्सेडन द्वैतवाद पर विजय पाने के प्रयास के विरुद्ध चेतावनी और सुरक्षा के रूप में कार्य करता है। चाल्सेडन, पवित्रशास्त्र के साथ, एक दिव्य व्यक्ति, पुत्र की एकता पर जोर देता है, जो अवतार के परिणामस्वरूप, अब अस्तित्व में है। वह जीवित है, वह दो प्रकृतियों में विद्यमान है।

पवित्रशास्त्र और चाल्सेडन मसीह की दोहरी प्रकृति को मिलाने या इन प्रकृतियों में और उनके माध्यम से कार्य करने वाले व्यक्ति की एकता को आत्मसमर्पण करने से इनकार करते हैं। साथ ही, जैसा कि मैकलियोड जोर देते हैं, चाल्सेडन सकारात्मक रूप से यीशु के अस्तित्वगत एकता पर जोर देते हैं। यह इस बात पर जोर देता है कि यद्यपि दो प्रकृतियाँ हैं, लेकिन एक हाइपोस्टैसिस या प्रोसोपोन, एक व्यक्ति है।

इसका मतलब यह है कि समस्या को हल करने का दावा किए बिना, इसे समझाने का दिखावा किए बिना एकता पर जोर दिया जाता है। दूसरे शब्दों में, यह रहस्य का सम्मान करता है। मैं उस जगह पर लौटता हूँ जहाँ से मैंने शुरुआत की थी।

बाइबल में दो विशाल रहस्य प्रकट किए गए हैं: एकता में ईश्वर की त्रिमूर्ति और मसीह के व्यक्तित्व में दो स्वभाव। अंत में, चाल्सेडन स्पष्ट करता है कि हमें पवित्रशास्त्र की तरह यह पुष्टि करनी चाहिए कि मसीह के सभी कार्य व्यक्ति के कार्य हैं। वह सभी कार्यों का अभिकर्ता, सभी शब्दों का वक्ता और सभी अनुभवों का विषय है।

परिणामस्वरूप, चाल्सीडॉन हमारे प्रभु के कार्यों, शब्दों और अनुभवों को दो प्रकृतियों के बीच विभाजित नहीं करता है। सच में, यह द्वैतवाद को पूरी तरह से हल किए बिना मसीह की बाइबिल की प्रस्तुति के साथ न्याय करने का प्रयास करता है। इस प्रकार, यह उन सभी लोगों के लिए एक चेतावनी के रूप में कार्य करता है जो ऐसा करने का प्रयास करते हैं।

रहस्य को समझाना उल्लंघन करना है। यदि वास्तव में ईश्वरीय रूप से प्रकट रहस्य हैं, तो हम पुष्टि करते हैं, हम त्रुटियों को बाहर करते हैं, और फिर हम अपनी अज्ञानता और बाइबल के विरोधाभासों, इसके रहस्यों, इसके विरोधाभासों का सम्मान करते हैं। मुझे इसे व्यक्त करने के लिए कभी कोई अच्छा शब्द नहीं मिला।

तीसरा, द्वैतवाद के आरोप के समान, चाल्सेडन की अक्सर मसीह की पूर्ण मानवता की पुष्टि करने के बावजूद डोकेटिक होने के लिए आलोचना की जाती है। यह आरोप कहाँ से उत्पन्न होता है?

इस तथ्य से कि पंथ कहता है कि यह मानव व्यक्ति के बिना अकल्पित मानव प्रकृति है, अर्थात्, एक हाइपोस्टैसिस, अर्थात्, एक अवैयक्तिक मानवता। और जैसा कि आपत्ति है, मसीह को एक पूर्ण और संपूर्ण प्रकृति का श्रेय देना कितना सार्थक है, जिसमें एक मानव मन और इच्छा शामिल है, अगर वह प्रकृति हमारे जैसे काम नहीं कर सकती है, यानी, सामान्य रूप से हमारे जैसे मानव व्यक्ति के साथ काम नहीं करती है? हम दो विषयों या दो व्यक्तियों को जन्म दिए बिना और इस तरह नेस्टोरियन पाखंड का शिकार हुए बिना मनुष्य यीशु के स्व-सक्रिय चरित्र की पुष्टि कैसे कर सकते हैं? और क्या मसीह के मानव व्यक्ति होने से चाल्सेडन का इनकार डोकेटिज्म की अंतर्निहित स्वीकृति नहीं है? इस आरोप के मूल में यीशु की मानवीय सीमाओं, विशेष रूप से उनके ज्ञान और शक्ति की सीमाओं को समझना है।

यदि अवतार का अभिनय करने वाला विषय ईश्वरीय पुत्र है, तो मार्क 13:32, ल्यूक 2:52 देखें। मैं इसे बाद में व्यवस्थित विज्ञान के दौरान उठाऊंगा, लेकिन अभी के लिए यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि चाल्सेडन द्वारा हाइपोस्टैसिया की पुष्टि यह नहीं कह रही थी कि मसीह की मानवता में कुछ कमी थी, इसके बजाय यह मसीह के दो अभिनय विषयों का खंडन था और इस प्रकार नेस्टोरियनवाद की अस्वीकृति थी। कोई अलग आदमी नहीं था। यही इसका मुद्दा है।

इस अर्थ में, उनका मानवीय स्वभाव अवैयक्तिक था। मुझे चर्च का यह कहना पसंद नहीं आया कि क्योंकि यह कभी अवैयक्तिक नहीं था, यह अस्तित्वहीन था, और फिर मैरी के गर्भ में अपने अस्तित्व के बहुत ही नैनोसेकंड से, यह वचन के साथ एकता के कारण अवैयक्तिक था। और फिर भी मैं उनकी बात समझता हूँ, लेकिन उनकी बात इस आलोचना की ओर ले जाती है जो अंत में उचित नहीं है।

पुत्र के व्यक्तित्व के साथ-साथ एक मानव व्यक्तित्व के अस्तित्व की पुष्टि करने का अर्थ यह होगा कि यीशु वास्तव में देहधारी पुत्र नहीं थे, बल्कि केवल एक व्यक्ति थे जो पुत्र के साथ विशेष रूप से मित्रवत थे। इसके अलावा, यह देखते हुए कि चाल्सेडन ने व्यक्तित्व का प्रयोग मनोवैज्ञानिक अर्थ में नहीं, बल्कि एक ऑन्टोलॉजिकल अर्थ में किया है, यह मसीह के मानव मनोविज्ञान की पूर्णता को नकारना नहीं है क्योंकि यह उनके मानव स्वभाव का हिस्सा है। बल्कि चाल्सेडन इस बात की पुष्टि कर रहे हैं कि मसीह के मानवीय अनुभवों का एक सक्रिय विषय एक दिव्य पुत्र था और इस प्रकार एक वास्तविक अवतार हुआ था।

तो, क्या मुझे हाइपोस्टैसिया पसंद है? नहीं, कि पुत्र की मानवता अवैयक्तिक थी। मुझे यह पसंद नहीं है, लेकिन मैं समझता हूँ कि यह क्या कहता है। कोई अलग आदमी, यीशु नहीं था, जो परमेश्वर आया और उसमें वास किया।

नहीं, दूसरी ओर, उनकी मानवता कभी भी एक अलग व्यक्ति नहीं थी, और यह कभी भी इस अर्थ में अवैयक्तिक नहीं थी कि शुरू से ही, इसका व्यक्तित्व ईश्वरीय पुत्र का व्यक्तित्व था जिसने खुद को सच्ची मानवता के रूप में अपनाया। इस प्रकार, यीशु का मानवीय स्वभाव हाइफ़न व्यक्तिगत था। अब यह हमें कहाँ छोड़ता है? ईएल मास्केल ने इसे अच्छी तरह से कहा है, "चाल्सीडॉन सत्य है और सत्य के अलावा कुछ भी नहीं है लेकिन यह संपूर्ण सत्य नहीं है।"

दूसरे शब्दों में, चाल्सेडन ने मापदंड तय किए और उन सुरक्षा-रेखाओं को स्थापित किया जिनके द्वारा अब क्राइस्टोलॉजिकल चर्चा होती है। काश यह सुरक्षा-रेखाओं के भीतर ही रहती, सुरक्षा-रेखाओं के भीतर। जब तक आप देखें, तब तक प्रतीक्षा करें।

ओह, मेरे शब्द। अंततः, यह केवल शास्त्र ही है जो हमारे अंतिम अधिकार के रूप में काम कर सकता है, लेकिन हम अपने जोखिम पर चाल्सेडोनियन परिभाषा की उपेक्षा करते हैं। चाल्सेडन के प्रकाश में शास्त्र पर आगे चिंतन की आवश्यकता है, और वास्तव में, चर्च के इतिहास के बाद के वर्षों में ठीक यही हुआ।

चाल्सेडन ने सभी क्राइस्टोलॉजिकल चर्चाओं को समाप्त नहीं किया। इसके बजाय, इसने और अधिक प्रश्नों और चुनौतियों के प्रकाश में आगे के विचारों को निर्देशित और निर्देशित करना जारी रखा। यह पैट्रिस्टिक क्राइस्टोलॉजी के बारे में मेरे सर्वेक्षण का समापन करता है।

मैं आधुनिक क्राइस्टोलॉजी का थोड़ा परिचय देने जा रहा हूँ। कुछ पृष्ठभूमि और मैं समय क्रम से थोड़ा हटकर चलता हूँ और शायद आप समझ जाएँगे कि क्यों। यीशु के जीवन आंदोलन।

बाइबल के प्रति नए दृष्टिकोण, अर्थात् आलोचनात्मक दृष्टिकोण का सबसे ठोस परिणाम, 19वीं शताब्दी में, हम निश्चित रूप से 18वीं शताब्दी से आगे जाने वाले हैं, यीशु के जीवन की बहुत सी कहानियाँ थीं। 19वीं शताब्दी में ऐतिहासिक चीज़ों में रुचि के नाटकीय नवीनीकरण के साथ-साथ ऐतिहासिक पद्धति में सफलताएँ भी हावी रहीं, और 18वीं शताब्दी ने इन मामलों में बहुत कम रुचि दिखाई।

डेसकार्टेस ने तर्क दिया कि इतिहास में न तो दर्शनशास्त्र जैसी निश्चितता है और न ही विज्ञान जैसी सटीकता। अपने समय के सबसे महान इतिहासकार के रूप में ख्याति प्राप्त वोल्टेयर ने अपना अधिकांश जीवन दर्शनशास्त्र में बिताया और केवल अंत में इतिहास के मामलों की ओर मुड़े। कांट न केवल इतिहास में रुचि नहीं रखते थे, बल्कि उन्होंने इसका अवमूल्यन भी किया।

19वीं सदी में इन दृष्टिकोणों में नाटकीय उलटफेर हुआ। हेगेल और मार्क्स के लिए, इतिहास दर्शनशास्त्र का माध्यम बन गया। हेगेल के लिए, इसने प्रदर्शित किया कि किस तरह से तर्कसंगत सिद्धांत जिसके द्वारा वास्तविकता संरचित होती है, हमारे अध्ययन के लिए सामने आए हैं।

मार्क्स के लिए, इतिहास उन सिद्धांतों को प्रदर्शित करता है जिनके द्वारा सभी समाजों का निर्धारण किया गया है और जिनके प्रकाश में भविष्य की भविष्यवाणी की जा सकती है। हालाँकि मार्क्स ने दावा किया कि उन्होंने हेगेल को सिर के बल खड़ा किया है, लेकिन मानवीय समझ के लिए इतिहास के महत्व के बारे में उनका उच्च मूल्यांकन हेगेल के समान ही था। इस नवीनीकरण ने, बदले में, अध्ययन के अधिक स्वीकार्य तरीकों की खोज को प्रेरित किया जो विषय के लिए सम्मान जीतेंगे।

वॉन रॉंके जैसे विद्वानों में, इसका परिणाम स्रोत सामग्री का जोरदार विश्लेषण, वैज्ञानिक तकनीकों और निष्पक्षता को ऐतिहासिक विश्लेषण में स्थानांतरित करने का विश्वास और कई बार मानव प्रकृति की क्षमताओं में असाधारण विश्वास था। बेशक, समस्या यह है कि मानवीय

मामले उसी तरह वैज्ञानिक विश्लेषण के लिए अतिसंवेदनशील नहीं हैं जिस तरह गुरुत्वाकर्षण के नियम हैं। प्रत्यक्षवादी इतिहासकारों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली तथाकथित वस्तुनिष्ठ तकनीकों ने व्याख्याओं की विविधता को जन्म दिया, जो उतनी ही शर्मनाक हो गई जितनी कि अगर वैज्ञानिक आज गुरुत्वाकर्षण के काम करने के तरीके के बारे में पूरी तरह से अलग-अलग निष्कर्षों पर पहुँचते रहे।

इस बीच, हालांकि, इतिहास के लिए नए उत्साह के साथ-साथ इसके अध्ययन की नई तकनीकें धर्मशास्त्र में भी शामिल हो गईं, जहां उन्हें शास्त्रों पर किए जा रहे आलोचनात्मक अध्ययनों में मिला दिया गया। यह विषयों का यह क्रॉस-परागण था जिसने यीशु के जीवन के साहित्य का निर्माण किया। हालांकि, यह भी ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि यह साहित्य किस मनोदशा में पनपा।

इसे एडोल्फ हार्नेक की पुस्तक 'व्हाट इज क्रिश्चियनिटी?' से बेहतर तरीके से कहीं और व्यक्त नहीं किया गया, जो 20वीं सदी के अंत में प्रकाशित हुई थी। हार्नेक की पुस्तक को लगभग दुखद अर्थ में पोषित किया गया था कि आधुनिक लोगों के लिए, यीशु अप्रासंगिक हो गए थे। वे उनके लिए उतने ही अप्रासंगिक थे, जितना कि वह युग जिसमें वे रहते थे।

इसलिए, हार्नेक ने जो करने की कोशिश की, वह ईसाई धर्म के अर्थ को एक विचार के रूप में समझना था। एक ऐसा विचार जो यीशु में और उसके माध्यम से साकार हुआ था, लेकिन खुद यीशु द्वारा परिभाषित या सीमित नहीं था। यहीं हार्नेक के विश्लेषण का सार था और यह प्रोटेस्टेंट उदारवाद का कार्यक्रम था।

ईसाई धर्म इस अर्थ में ऐतिहासिक था कि यह यीशु पर केंद्रित था, लेकिन यह इस अर्थ में ऐतिहासिक नहीं था कि यीशु ने इसका अर्थ परिभाषित किया। यह सूत्रीकरण क्षमाप्रार्थी उद्देश्यों के साथ किया गया था, उम्मीद थी कि परिणामस्वरूप ईसाई धर्म अपने सुसंस्कृत तिरस्कारकर्ताओं के ग्रहण किए गए मानदंडों के भीतर अधिक आसानी से समझौता करेगा। हालांकि दिलचस्प बात यह है कि हार्नेक ने दावा किया कि वह ऐतिहासिक विज्ञान के तरीकों के आधार पर अपने निष्कर्षों पर पहुंचे और एक क्षमाप्रार्थी या धार्मिक दार्शनिक के रूप में नहीं, जो वास्तव में वह बिना जाने थे।

यह आधुनिकतावाद की अंतर्निहित अंधता है। महाद्वीपीय यूरोप और ब्रिटेन दोनों में यीशु के जीवन के बारे में लिखना एक प्रचलन बन गया। डैनियल पाँविल्स कहते हैं कि विक्टोरियन लोगों के बीच यह एक ऐसा विषय था, जिसके लिए हर तरह के लेखक, भक्त, कट्टरपंथी, पादरी या सनकी, जल्दी या बाद में आकर्षित हुए।

गौगेल जैसे कई प्रसिद्ध लेखकों की कृतियाँ प्रकाशित कीं। ब्रिटेन में जेआर सीली, रिचर्ड हैनसेन, एफडब्ल्यू फररर और अल्फ्रेड एडर्सहेम (एक रूढ़िवादी) द्वारा किए गए अध्ययन सबसे अधिक प्रसारित हुए। अल्बर्ट श्वित्ज़र ही वह व्यक्ति थे जिन्होंने इस आंदोलन को खत्म करने का बीड़ा उठाया।

श्वित्ज़र एक अनिच्छुक अविश्वासी प्रतीत होता है, लेकिन वह संगीत, चिकित्सा और धर्मशास्त्र में डॉक्टरेट के साथ एक प्रतिभाशाली व्यक्ति था जो चिकित्सा मिशन पर अफ्रीका गया और सृष्टि की पूजा करने लगा। मैं एक सर्वेश्वरवादी बन गया। मुख्य रूप से जर्मनी में लिखे गए कार्यों की गहन और कभी-कभी उबाऊ समीक्षा के बाद उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि लेखकों ने सच्चे इतिहास के साथ खिलवाड़ किया है और सुसमाचार के लेखों में यीशु की एक काल्पनिक और आदर्श तस्वीर को पढ़ा है।

वास्तव में, इनमें से अधिकांश अध्ययनों से जो यीशु उभर कर सामने आया, वह उन उदार लेखकों की तरह था जिन्होंने उन्हें लिखा था कि श्वित्ज़र ने कहा कि वे मानव इतिहास के लंबे कुएं में नीचे देख रहे होंगे और अपने स्वयं के चेहरे को नीचे की ओर प्रतिबिंबित होते हुए देख रहे होंगे। वह एक प्रतिभाशाली व्यक्ति था। उन्होंने यह भी निष्कर्ष निकाला कि यीशु झूठे पैगंबर थे।

प्रतिभाशाली होना किसी को नहीं बचाता। पहले कुरिथियों एक से तुलना करें, बहुत से प्रतिभाशाली लोग नहीं बचाए जाते। शायद यह ईश्वर की कृपा को बढ़ाता है कि वह प्रतिभाशाली लोगों की तुलना में अधिक साधारण मनुष्यों को बचाता है, मुझे नहीं पता।

वहाँ यीशु “तर्कवाद द्वारा डिज़ाइन किया गया एक व्यक्ति था जिसे उदारवाद द्वारा जीवन दिया गया था और आधुनिक धर्मशास्त्र द्वारा ऐतिहासिक परिधान पहनाया गया था।” अरे यार, क्या वह अच्छा है? यह एक ऐसा व्यक्ति था जो अब “टुकड़ों में बिखर गया है, उद्धरण बंद करें, ठोस ऐतिहासिक समस्याओं से त्रस्त” जिसके परिणामस्वरूप यह उद्धरण आधा ऐतिहासिक, आधा आधुनिक हो गया। यीशु श्वित्ज़र ने निष्कर्ष निकाला कि वह कभी भी उन धार्मिक अपेक्षाओं को पूरा करने में सक्षम नहीं होगा जिन्होंने उनके निर्माण को प्रेरित किया था।

श्वित्ज़र ने जो बुनियादी गलती की, वह यह मानना था कि अगर यीशु को आधुनिक व्यक्ति की तरह कपड़े पहनाए जाएं तो उनका मतलब ज़्यादा हो सकता है, बजाय इसके कि उन्हें वैसे ही छोड़ दिया जाए जैसा वे वास्तव में थे। आंदोलन का वास्तविक महत्व इसकी ऐतिहासिक खोजों में नहीं था। ये, सबसे अच्छे रूप में, न्यूनतम थे।

यह उद्यम, वास्तव में, पारंपरिक सिद्धांत के बंधनों को तोड़ने का एक विस्तृत प्रयास था, जो ज्ञानोदय के आधार पर किया गया प्रयास था। ऐसा माना जाता था कि इतिहास ही वास्तविकता की कुंजी है। यह एक असाधारण रूप से भोली धारणा थी जो वास्तविकता की कठोर चट्टान पर गिर गई और जिसका अंत श्वित्ज़र ने अनौपचारिक रूप से घोषित कर दिया।

आंदोलन की घोर विफलता ने धार्मिक समुदाय को घायल कर दिया। यह एक ऐसा घाव है जो आज तक ठीक नहीं हो पाया है। हमारे अगले व्याख्यान में मैं उदार प्रोटेस्टेंटवाद के बारे में बात करना शुरू करूँगा।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा क्राइस्टोलॉजी पर दिए गए उनके व्याख्यान का विषय है। यह सत्र 5, पैट्रिस्टिक क्राइस्टोलॉजी, भाग 4, मोनोफ़िज़िज़्म और चाल्सेडन की परिषद है।